SJIF 2023 = 7.858

ISSN: 2277-7857

समकालीन हस्तक्षेप

साहित्य, समाज और संस्कृति की पीयर-रिव्यूड त्रैमासिक शोध-पत्रिका

वर्ष: 18, अंक: 3, जनवरी - मार्च 2025

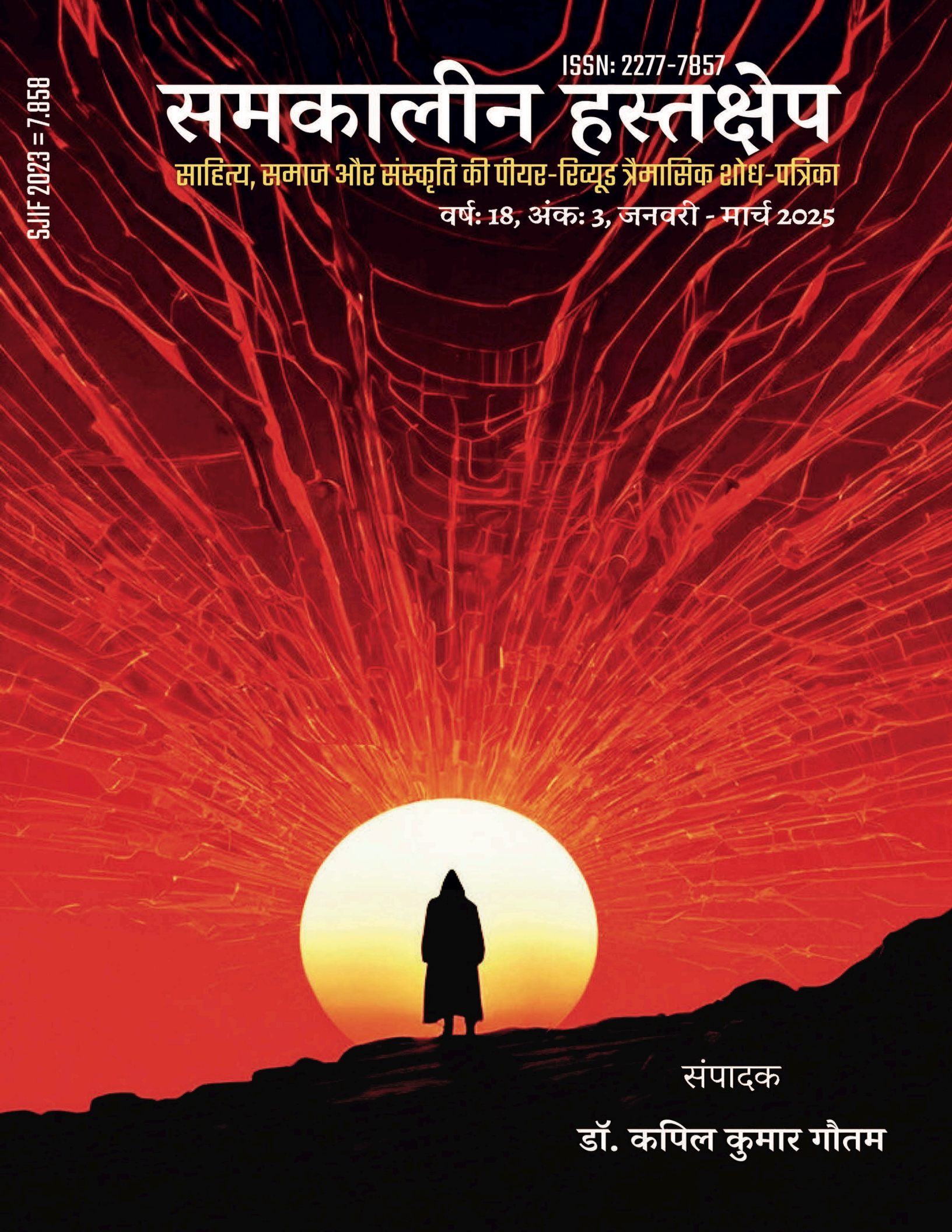

संपादक

डॉ. कपिल कुमार गौतम

वर्ष: 18, अंक: 3, जनवरी-मार्च 2025

समकालीन हस्तक्षेप

साहित्य, समाज और संस्कृति की पीयर-रिव्यूड त्रैमासिक शोध-पत्रिका

‘समकालीन हस्तक्षेप’ त्रैमासिक शोध-पत्रिका में प्रकाशित शोध-पत्रों/ लेखों के माध्यम से व्यक्त किये गए विचार और स्थापनाएं लेखक के अपने हैं। उनके विचार और स्थापनाओं से संपादक मंडल अथवा प्रकाशक सहमत हों, यह जरुरी नहीं है। शोध-पत्रों/ लेखों में व्यक्त विचारों और स्थापनाओं के लिए सम्बन्धित लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे। विवाद की स्थिति में सभी मामले केवल भद्रक न्यायालय (उड़ीसा) के अधीन होंगे।

इस शोध-पत्रिका के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। समीक्षा, लेखों तथा शोध-पत्रों में उद्धरण के अतिरिक्त, प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश का अनुवाद, प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक माध्यम से पुनर्प्रकाशित नहीं किया जा सकता। केवल सम्बंधित शोध-पत्र के लेखक ही अपने शोध-पत्र को अकादमिक तथा व्यक्तिगत उपयोग करने हेतु निर्बाध रूप से स्वतंत्र होंगे।

© समकालीन हस्तक्षेप

वर्ष: 18, अंक: 3, जनवरी-मार्च 2025

Published by

RESEARCH WALKERS
2nd Floor, Rout Niwas, Kuansh,
Near Town Police Station, Bhadrak,
Odisha, India – 756100

E-mail: hastakshep@hotmail.com
WhatsApp Us: +91 94311 09143
Website: www.hastakshep.co.in
www.facebook.com/hastakshep
www.instagram.com/hastakshep

संपादक मंडल

संपादक

डॉ. कपिल कुमार गौतम
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
संघटक राजकीय महाविद्यालय, मीरापुर, बांगर, बिजनौर,
एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

प्रबंध-संपादक

शेषनाथ वर्णवाल
मैनेजिंग पार्टनर, रिसर्च वॉकर्स,
एमआईजी 108, हेडगेवार कॉलोनी,
साँची, मध्य प्रदेश

उप-संपादक

डॉ. अलका धनपत
पूर्व-विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
स्कूल ऑफ़ इंडियन स्टडीज़, महात्मा गाँधी इंस्टिट्यूट,
यूनिवर्सिटी ऑफ़ मॉरीशस, मॉरीशस

डॉ. दीनानाथ
प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
सीएमपी डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. रजनी बाला अनुरागी
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, राजिंदर नगर,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. मोहन लाल चढ़ार
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक, मध्य प्रदेश

संपादक मंडल सदस्य

डॉ. प्रदीप कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
सत्यवती कॉलेज, अशोक विहार
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. प्रवीण कटारिया
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश

डॉ. उमाशंकर कौशिक
असिस्टेंट प्रोफेसर, योग शास्त्र
के.जे. सोमैया इंस्टिट्यूट ऑफ़ धर्मा स्टडीज,
सोमैया विद्या विहार विश्वविद्यालय,
पूर्वी मुंबई, महाराष्ट्र

डॉ. अनीश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. शरद पंडरीनाथ सोनवने
असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), पालि प्राकृत
विभाग, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत
विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर

डॉ. अवधेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), हिंदी विभाग,
डॉक्टर हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
सागर, मध्य प्रदेश

डॉ. लेखराम सेलोकर
पी-एच. डी. (बौद्ध अध्ययन)
आनंद बुद्ध विहार, समता नगर,
नागपुर, महाराष्ट्र

डॉ. अमित कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
राजा गार्डन, नई दिल्ली

डॉ. संदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ़ लीगल स्टडीज,
मदरहूड विश्वविद्यालय, रूडकी, उत्तराखंड

डॉ. राहुल सिद्धार्थ
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन
विश्वविद्यालय, साँची, मध्य प्रदेश

डॉ. हंसा दीप
लेक्चरार हिंदी, भाषा अध्ययन विभाग,
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो, किंग्स कॉलेज सर्किल,
टोरंटो, ओंटारियो, कनाडा

डॉ. आमिर खान अहमद
असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग,
हरी-गायत्री दास महाविद्यालय,
गुवाहाटी विश्वविद्यालय,
गुवाहाटी, असम

डॉ. विकास कुमार पाठक
समन्वयक, अनुवादिनी फाउंडेशन,
अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्, उच्चतर
शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

डॉ. प्रतीक सागर
असिस्टेंट प्रोफेसर, आर्ट एंड डिजाईन विभाग,
शारदा स्कूल ऑफ़ डिजाईन, आर्किटेक्चर एंड
प्लानिंग, शारदा यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नॉएडा

डॉ. सुनीता गुरुंग
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. लोकेश चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर, योग विज्ञान विभाग,
श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय,
निंबाहेड़ा, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

डॉ. विपिन कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
श्री बाबू कलीराम राकेश राजकीय महाविद्यालय,
चूड़ियाला, हरिद्वार, उत्तराखंड

डॉ. प्रत्युष प्रशांत
पी-एच.डी., सेंटर फॉर वीमेंस स्टडीज,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

अनुक्रम

वर्ष: 18, अंक: 3, जनवरी-मार्च 2025

सम्पादकीय

1.	यात्रा साहित्य और लोक संस्कृति	अल्का स्वामी	9-12
2.	स्वतंत्रता पूर्व भारत में प्रमुख राजनीतिक दल और उनकी विचारधारा	सतीश कुमार पाठक	13-17
3.	वित्तीय भूमंडलीकरण के दौर में मज़दूर	डॉ. संतोष कुमार	18-24
4.	पवित्र संकुल के रूप में कुंभ मेले का जेण्डर परिप्रेक्ष्य से सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण	प्रिया गर्ग, अमरमणि त्रिपाठी	25-28
5.	'अज्ञेय' की कहानियाँ और मनोविज्ञान	मोती दान	29-32
6.	'बाणभट्ट की आत्मकथा' में बाण	डॉ. अमित कुमार	33-37
7.	'वसीयतनामा' कहानी में अभिव्यक्त वृद्धों की समस्याएँ	प्रा. डॉ. पी. एम. भुमरे	38-42
8.	रामचरितमानस में मातृत्व की संकल्पना मानवी पात्रों के संदर्भ में	मोनिका पटेल	43-47
9.	बौद्ध ग्रंथों में आगत पर्यावरणीय अवधारणा: एक विश्लेषण	कुमारी शिखा	48-50
10.	गोंड जनजाति के देशज ज्ञान का शैक्षिक महत्व: एक अध्ययन	हरिशंकर अहिरवार, डॉ. प्रभाकर पाण्डेय	51-54
11.	कुल्लू की देव भार्थाएं: एक सामाजिक और सांस्कृतिक विश्लेषण	कमल चंद	55-58
12.	'दूर का आकाश' नाटक में 'चातक' जी का प्रकृति एवं पर्यावरण प्रेम	डॉ. कृष्णा	59-62
13.	इक्कीसवीं सदी की लेखिकाओं के संस्मरणों में विषय-विविधता	ऋचा प्रिया	63-67
14.	सोशल मीडिया पर अभिव्यक्ति की आजादी की लड़ाई: भारत में फर्जी खबरों पर लगाम	पूरन चंद्र पांडे, डॉ. के.बी. अस्थाना	68-74
15.	'ज़िह्न में कुछ शेर थे' ग़ज़ल संग्रह में सामाजिक यथार्थ	डॉ. सुधीर साहू	75-78
16.	भारतीय कथा चित्रों में प्रतिबिंबित सांस्कृतिक पहचान	पूनम कुशवाहा, डॉ. सचिन सैनी	79-88
17.	नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक परिस्थितियाँ और उनमें निहित प्रमुख आंदोलन	चंदन कुमार	89-92
18.	रामधारी सिंह 'दिनकर' कृत रश्मिरथी में पुरुष अंतर्द्वंद्व	डॉ. रामेश्वरी दास	93-99

19.	केरल के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार एन.ई. विश्वनाथन अय्यर के ललित निबंधों में समय, समाज और संस्कृति	अर्जुन के	100-103
20.	राष्ट्रीय स्वाधीनता और भोजपुरी सिनेमा : एक अध्ययन	रूबी पाण्डेय	104-110
21.	भूमंडलीकरण के दौर में ग्रामीण भारतीय महिलाओं के समक्ष अवसर और चुनौतियां	डॉ. वीणा कुमारी	111-115
22.	सोशल मीडिया और मानसिक स्वास्थ्य	डॉ. गिरीश कुमार सिंह, डॉ. संध्या शर्मा, डॉ. दीपा गोयल	116-119
23.	राम की शक्ति पूजा और कुंडलिनी कर्म	मुकुंद शर्मा	120-123
24.	नारी अस्मिता के संदर्भ में सुनीता जैन की आत्मकथा: 'शब्दकाया'	अंजली कुमारी	124-127
25.	किन्नरों की दुःख एवं पीड़ा की कथा 'किन्नर कथा'	संजय कुमार यादव	128-132
26.	भारतीय ज्ञान परंपरा: भाषा, लिपि और डिजिटल दस्तावेजीकरण	डॉ. कपिल देव पंवार	133-137
27.	संस्कृत व्याकरण परम्पराओं में 'चान्द्र व्याकरण के स्त्रीप्रत्यय'	डॉ. अरुण किशोर भट्ट	138-143
28.	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में 'नारी-प्रेम' की मूल्यदृष्टि	उत्तम कुमार नोनिया	144-149
29.	सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन के प्रणेता: गुरु घासीदास	शुभम दिव्य, डॉ. शंपा चौबे	150-153
30.	कुमाऊँ के लोकोत्सवों पर आधारित मेले : एक सांस्कृतिक अध्ययन	मुकेश कुमार	154-158
31.	'अक्करमाशी' में अभिव्यक्त भूख की समस्या और जीवन की दशा का स्वरूप	विरेश	159-162
32.	विद्यासागर नौटियाल के साहित्य में पर्यावरणीय विमर्श	करूणा गायकवाड़, डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति	163-166
33.	लोकतंत्र की सफलता के मार्ग के रूप में अंबेडकर का मानवतावाद	आरती राजपूत, डॉ. अनिल दुबे	167-170

सम्पादक की कलम से...

किसी भी सभ्य और जीवंत समाज की पहली पहचान यह होती है कि वहाँ विचारों के लिए कितनी जगह है। व्यक्ति क्या सोचता है, क्या कहता है, कैसे कहता है और किन शब्दों में अपनी बात रखता है; यह केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रश्न नहीं होता, बल्कि समाज के बौद्धिक स्वास्थ्य का भी संकेत होता है। भारत जैसे विविधता से भरे लोकतंत्र में यह स्वतंत्रता और भी अधिक आवश्यक हो जाती है, जहाँ भाषा, संस्कृति, धर्म, क्षेत्र और दृष्टिकोण के इतने विस्तार हैं कि यदि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता न हो, तो यह विविधता धीरे-धीरे घुटन में बदल सकती है। इस स्वतंत्रता को अगर कोई सबसे सजीव, सबसे व्यापक और सबसे संवेदनशील रूप देता है, तो वह साहित्य है। साहित्य महज़ मनोरंजन या कल्पना का माध्यम नहीं है। वह मनुष्य की आत्मा से उपजा वह संवाद है, जो समय की असंख्य परतों को चीरकर वर्तमान को जागरूक बनाता है। साहित्य सत्ता से प्रश्न करता है, समाज से संवाद करता है और व्यक्ति के भीतर सुषुप्त संवेदनाओं को झकझोरता है। इतिहास साक्षी है कि जब भी अभिव्यक्ति का गला घोंटने की कोशिश हुई है, साहित्य ने प्रतिरोध की मशाल को और अधिक तेज किया है। चाहे वह औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध लिखा गया भारतीय नवजागरण का साहित्य हो, आपातकाल के दौरान रची गईं साहसिक कविताएं और कहानियाँ हों, या फिर आज के समय में धार्मिक, जातीय और लैंगिक असमानताओं पर आधारित लेखन हो। हर युग में साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के ज़रिए स्वतंत्रता की रक्षा की है। लेकिन आज अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक बार फिर कठिन मोड़ पर खड़ी है। लेखक यह सोचकर कतराने लगा है कि क्या यह विषय विवादित तो नहीं हो जाएगा? क्या इससे किसी की भावना को ठेस पहुंचेगी? क्या यह मेरी सामाजिक या कानूनी सुरक्षा को खतरे में डालेगा? यही वह जगह है जहाँ साहित्य पर ख़ामोशी का खतरा मंडराने लगता है और जब साहित्य ख़ामोश होता है, तब समाज केवल शोर से भरता है, विचार से नहीं। ऐसी परिस्थिति में विचारों के प्रति ही समाज विमुख होने लगता है। आज के समय में विरोध को राष्ट्रविरोध और आलोचना को असहिष्णुता कहकर खारिज कर देना एक चिंताजनक प्रवृत्ति बन चुकी है।

आज जब देश में कई साहित्यकार सत्ता, जाति, धर्म और पितृसत्ता के खिलाफ आवाज़ उठा रहे हैं, तब उन्हें केवल साहित्यिक नहीं, नागरिक भूमिका में भी देखा जाना चाहिए। वे लोकतंत्र के प्रहरी हैं। वे पाठकों को यह सिखाते हैं कि मतभिन्नता घातक नहीं होती, बल्कि आवश्यक होती है। वह लोकतंत्र का मूल तत्व है। यदि सब एक जैसा सोचने लगें, एक जैसे बोलने लगें, एक जैसे लिखने लगें, तो वहाँ जीवन नहीं, केवल अनुकरण होता है। इस संदर्भ में यह भी विचारणीय है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि लेखक किसी के धर्म, आस्था या पहचान का अपमान करें। स्वतंत्रता और जिम्मेदारी, दोनों साहित्य की बुनियादी शर्तें हैं। एक लेखक को अपनी चेतना से यह तय करना होता है कि वह किस सीमा तक जाकर अपनी बात कहे और किस संवेदना के साथ दूसरों की बात को भी समझे। अभिव्यक्ति का दायरा बड़ा हो, लेकिन उसमें सहानुभूति की गहराई भी हो। यही साहित्य की गरिमा है। डिजिटल युग में, जहाँ हर व्यक्ति अपने विचारों को सोशल मीडिया पर प्रकाशित कर सकता है। वहाँ साहित्य और अधिक ज़रूरी हो जाता है क्योंकि वह विचार की गंभीरता और भाषा की गरिमा को बनाए रखता है। आज की डिजिटल ट्रोल-संस्कृति, जहाँ असहमति के जवाब में गालियाँ मिलती हैं, वहाँ साहित्य हमें सभ्य विरोध की भाषा सिखाता है। वह बताता है कि क्रोध को कैसे करुणा में बदला जा सकता है और प्रतिरोध को कैसे संवेदना के साथ व्यक्त किया जा सकता है। इसलिए आज जब अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करने के प्रयास बढ़ते जा रहे हैं। कभी धार्मिक भावना के अपमान के नाम पर, कभी राष्ट्रहित के बहाने, तब साहित्य ही वह शक्ति है, जो इस चुप्पी को तोड़ सकती है। वह नारा नहीं देता, पर विचार देता है; वह उत्तेजना नहीं फैलाता, पर समझ पैदा करता है; वह विरोध करता है, पर उस विरोध में मानवीयता का हाथ थामे रखता है।

साहित्य जब भी ईमानदारी से लिखा जाता है, वह किसी-न-किसी शक्ति-सत्ता की संरचना को असहज करता है और यही साहित्य की सार्थकता भी है। यदि कोई रचना केवल तालियाँ बटोरती है, और कोई असुविधा पैदा नहीं करती, तो शायद उसमें जीवन नहीं है। साहित्य को असुविधाजनक होना चाहिए क्योंकि वह हमें सोचने के लिए बाध्य करता है। वह यथास्थिति से असहमत होकर नए विकल्प की संभावना पैदा करता है। आज जब लोकतंत्र शब्द केवल चुनाव तक सीमित होता जा रहा है और विचारधारा की बहसें शोर में बदल चुकी हैं, तब साहित्य को चुप नहीं रहना चाहिए। साहित्यकार को बोलना चाहिए, साहित्य को लिखना चाहिए, और हर बार यह कहना चाहिए कि स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं, ज़िम्मेदारी भी है। इस जिम्मेदारी को साहित्य बखूबी निभाता है।

(डॉ. कपिल कुमार गौतम)